Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2020, VOL- 8/62

भूपेंद्र नारायण मंडल का सामाजिक आर्थिक राजनीतिक प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

माधव कुमार[1] & कपिल देव[2], Ph. D.

[1]शोधार्थी, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, लालू नगर मधेपुरा राजनीतिक विज्ञान विभाग बीएनएमयू, मधेपुरा

[2]शोध निर्देशक,प्रसाद यादव पार्वती विज्ञान महाविद्यालय कीर्ति नगर, मधेपुरा

Abstract

भूपेंद्र नारायण मंडल ने अपने जीवन–काल में अनेक शीर्ष पदों पर काम किया फिर कभी भी उन्होंने अपने आदेश देने के अधिकार का उपयोग न किया और जिस पर भी अपने साथ काम करने वालों से सदैव उन्हें गहरा रिश्ता और स्नेह आदर सम्मान मिलता रहा। अधिक सुख की सराहीनता से वे भली भांति परिचित थे।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

''भूपेंद्र नारायण मंडल आधुनिक राजनीतिक शास्त्र के पंडित थे और अन्य विषय के विद्वमान थे इन सब बातों के अलावा उनके व्यक्तित्व का एक और विशिष्ट पहलू है जिसमें वह मेरे निकट स्नेह और आदर के पात्र थे। वह कलाकारों और साहित्यकारों की कद्र करना जानते थे।''[1]

भूपेंद्र नारायण मंडल प्रायः इस बात की चर्चा करते थे औरतों के बारे में भारतीयों का मन इतना दर किनार रूसीयों के प्रति क्यों बना है भारतीय चाहते हैं कि औरत तेज बुद्धिमान और सचेत हो लेकिन साथ–साथ यह भी चाहते हैं कि वह अपने अधीन रहे, कब्जे में रहे इस प्रकार की वीसंगतीयाँ की भूपेंद्र नारायण मंडल गहरी आलोचना करते थे और कहते थे वे दोनों बातें एक साथ करना असंभव है। औरतों को आजादी मिलनी चाहिए, ताकि वह भी समान रूप से खड़ी हो सके एक बार उन्होंने भूपेंद्र नारायण मंडल डॉ राम मनोहर लोहिया द्वारा लिखित सप्तक्रांति नामक पुस्तक पढ़ने के लिए दी उनको

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सप्तक्रांति में नर–नारी विशेषता समाप्त करने की एक क्रांति भी थी। ''लोहिया जी भी यही चाहते थे कि नर–नारी को नीति और अनीति के बारे में समान कसोटी होना चाहिए। योनि शुचिता के बारे में प्राचीन युग के एक ऋषि की लोहिया जी को अर्थपूर्ण लगती थी उस ऋषि ने कहा था और हर महीने कुमारी और पवित्र होती है।''[2]

भूपेंद्र नारायण मंडल के मन में यह बात पूरी तरह फैल गई थी की आर्थिक विपन्न्ता का तार कहीं ना कहीं सामाजिक असमानता से ही जुड़ा है और बिना सामाजिक समस्ता एक आर्थिक बराबरी का कोई अर्थ नहीं है। इस सामाजिक समानता का हक दिलाने व संघर्ष दिखे समाज में छोटी–छोटी भी विसंगतिया ही भयानक भी विसंगती का रूप धारण कर लेती है और आदमी को आदमी बनाए रखने में भी बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ता है ।

''अतः अवसर मिलते ही उन्होंने अंतिम पायदान के लोगों को मान सम्मान की उच्चतम सीढी पर रखा। यही कारण था कि सत्ता–परिवर्तन के साथ ही उन्होंने बिहार की विधान सभा के सम्मानित पद पर श्री धनिक लाल मंडल को रखा ये सोचते हुए कि अब तो उन्होंने सब लोग श्रीमान सभापति महोदय के संपूर्ण संबोधन से पुकारेंगे।''[3]

भूपेंद्र नारायण मंडल एक राजनीतिक संत थे वे कभी सांसारिक बंधन में लिप्त नहीं थे भूपेंद्र नारायण मंडल सील और सौम्यता सभ्यता की खान थे। उन्होंने दूसरों के दुख देखकर दुखी और सुख देखकर सुखी होता था भूपेंद्र नारायण मंडल हर समय सभी में समानता का भाव रखते थे वह मद लोभ मोह और क्रोध से परे थे तथा उनका ह्रदय कोमल था। भूपेंद्र नारायण मंडल सभी को सम्मान देते किंतु वे स्वयं मान एवं सम्मान रहित थे कहा जाता है ,कि कलियुग में एक दान ही प्रधान है जो जिस किसी प्रकार दिए पर कल्याण ही करता है ।भूपेंद्र नारायण मंडल भी ऐसे ही दानी थे तरुणा भूपेंद्र नारायण मंडल कोसी बाढ़ से भागे हुए रैयतो की भूमि निलाम करा दी गई जमीन को पुनः उन पीड़ित रैयतो को वापस दिलाने के लिए अपने जमींदार पिता का कोप भाजन बनना पडता है। किन्तु वही उन्हें जमीन वापस दिला कर ही रहता है ।

जब भूपेंद्र नारायण मंडल विधायक और सांसद थे अपने वेतन भत्ते को अपने निजी एवं पार्टी खर्च के बाद शेष राशि निर्धन छात्रों कार्यकर्ताओं एवं अन्य पीड़ितों को बांट

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दिया करते थे। ''यह संत चरित्र की गौरव उज्जवल परंपरा है। जिसका निर्वाह भूपेंद्र नारायण मंडल ने अंत समय तक किया।''[4]

आजादी के बाद भूपेंद्र नारायण मंडल समाजवादी आंदोलन के अगुवा डॉ राम मनोहर लोहिया के साथ समाजवाद को राजनीतिक जीवन में पूर्ण रूप देने का गुरुतर भार श्री भूपेंद्र नारायण मंडल पर परा ''समाजवाद को भूपेंद्र नारायण मंडल ने अपने जीवन का अंग बनाया और इसका व्यापक एवं गहन प्रचार–प्रसार कर इसे राजनीतिक जीवन का आचरण मुख्य आदर्श सिद्ध किया''[5] डॉक्टर लोहिया का कहना था कि मैं सिर्फ सिद्धांत जानता हूँ। आज जब भी गजेंद्र जी को देखा हूँ तो बराबर ऐसा लगता है कि ''अपनी गरीबी और अपने परिवार का उन्होंने उतना ख्याल नहीं जितना सामाजिक कार्य का अपनी टूटी–फूटी भाषा में ही सजी मनुष्य भूपेंद्र नारायण मंडल के सहज विचारों को जिंदा रखने का काम सदा करते रहते और गांव में घूमते रहते हैं। आज भी उन पर भूपेंद्र नारायण मंडल का असर बरकरार नजर आता है।''[6]

दमन नीति के तहत किसान की जो फसल है उस पर फसल का दाम इस ढंग से तय करना चाहिए कि उसमें जो लागत खर्च पड़ता है। उस पर कुछ मुनाफा जोड़कर उसको दान मिले साथ ही ऑर्गेनाइज इंस्टिट्यूट के सम्मान का दाम भी तय करने में यह ध्यान रखा जाए कि उसकी जो लागत खर्च हो उसके डेढ़ गुने से ज्यादा दाम किसी चीज का नहीं होने पाए और फिर यह भी कि दोनों तरह की चीजों के दाम में संतुलन कायम किया जाय ।इस तरह का कोई कानून लॉ कमीशन की तरफ से आये।

अभी एस सी, एस टी के वेल्फेयर वगैरह की जो रिपोर्ट आई है। वह बतलाती है।उसका कोटा कहीं नहीं पूरा हुआ है टेक्निकल ट्रेनिंग मेरिन इंजीनियरिंग इन डिफेंस पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग जैसे अन्य सभी जगह उसका कोटा खाली रह गया है इस तरह डिफेंस पब्लिक सेक्टर में जो बहाली उसमें हरिजनों को पूरी सीट मिलनी चाहिए आज भी जो अत्याचार हरिजनों पर हुआ है पूर्णिया जिला जहाँ पुरानी विधानसभा के अध्यक्ष भी इंवॉल्व थे। उसी तरह यू पी में जो घटना हुई । अभी हम स्वाधीनता की रजत जयंती मना चुके हैं उसके बाद भी हरिजनों की यहाँ स्थिति क्या है।

समाज का जो विकास होता है उस विकास में भी भिन्न–भिन्न इतिहास होता है इस देश के विकास में जब शोषण प्रथा शुरू हुई उसने यहां वर्ण बाद और जातिवाद का

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

रूप धारण कर लिया जो हर स्तर पर प्रभाव डालता है इन सभी बातों को सामने रखकर आज इस बात पर विचार किया गया यूं तो समूचे संसार में शोषण प्रथा रही है।

भूपेंद्र नारायण मंडल हमारी पार्टी का यह लक्ष्य है कि इस देश में बहुत से लोग ऐसे हैं जो आगे बढ़े हुए हैं लेकिन ज्यादा लोग ऐसे हैं जो बहुत ही नीचे हैं हमारी पार्टी समाज का निर्माण इस तरह से करना चाहती है जिसमें कहीं पर असमानता ना हो और आर्थिक मामले में सभी लोग बराबर हो जो पिछड़े या दलित वर्ग के आदमी है उनको हर तरह से सरकार की ओर से मदद लेकर ऊपर उठाया जाएगा तभी देश में बहुत से लोग हैं जो बहुत ही दलित हैं और उनको ऊपर उठाने की आवश्यकता है उनकी बातों पर अभी कोई ध्यान नहीं दिया जाता है उनकी जरूरतों पर ध्यान देकर उनको ऊपर उठाने की जरूरत है और हमारी पार्टी की यही पॉलिसी है जिसमें हमें अच्छा समझते हैं भले ही आप वैसा ना समझिए इसी सिलसिले मे वे यह कह रहा था कि सहरसा जिले में पिछड़े वर्ग दलित वर्ग के लोग को हमेशा से निगलेट किया गया है।

भूपेंद्र नारायण मंडल यह स्पष्ट रूप में जाहिर है कि बिहार सरकार की कृषि नीति एक कदम फेल कर चुकी है इसका नजारा समूचे बिहार में देखने को मिलता है सहरसा जिले की स्थिति के बारे में अखबार में एक समाचार निकला है जिसमें यह कहा गया है कि वहां के लोगों की तकलीफ यहां तक बढ़ गई है बिहार में समाजवादी विचारों का उदय मुक्त रूस के समाजवादी क्रांति की देन कहीं जा सकती है इस क्रांति ने बिहार के सामाजिक और राजनीतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया और 1920 के बाद इन्हीं विचारों ने समाजवाद की स्थापना के आंदोलन का रूपधारण कर लिया।

उल्लेखनीय है कि 17 मई 1934 को अंजुमन इस्लामिया हॉल पटना में कांग्रेस के अंदर सोशलिस्ट पार्टी की बैठक आचार्य नरेंद्र देव जी की अध्यक्षता में हुई थी इसमें कांग्रेस सोशलिस्ट के अखिल भारतीय संगठन की स्थापना के लिए एक उप समिति बनाई गई थी जिसके अध्यक्ष यह आचार्य नरेंद्र देव के आह्वान थे जयप्रकाश नारायण कहा जा सकता है कि बिहार में ही समाजवादी पार्टी का जन्म हुआ नवंबर 1917 में रूस में समाजवादी क्रांति की सफलता ने भारतीयों का ध्यान अपनी तरफ खींचा और इसके बाद बिहार में समाजवादी विचारों के प्रवेश की गति तेज हो गई भारत के तत्कालीन गरम दल के नेता लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल रूस की समाजवादी क्रांति से पहले ही

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यूरोप और अमेरिका के समाजवादियों के संपर्क में आ चुके थे उनका ख्याल था कि विदेश अधिकारियों के विरुद्ध लड़ना ही पर्याप्त नहीं है वरना उन विशेष अधिकारों के विरूद्ध लड़ना भी आवश्यक हैं जिनका भोग भारतीय पूंजीपति और जमींदार करते रहे हैं।

महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में चलाए जा रहे राष्ट्रीय आंदोलन में कंधे से कंधा मिलाकर वामपंथी विचारों ने सहयोग दिया, परंतु गांधी जी के द्वारा अचानक सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित किए जाने के कारण कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेतागणों में एक भारी प्रतिक्रिया हुई थी। संपूर्ण क्रांतिकारी का नारा देकर इन्होंने पुनः समाजवादी आंदोलन की रूपरेखा रखी परंतु यह आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन बनकर रह गया जिसकी परिणीति जनता पार्टी के गठन के रूप में हुई इंदिरा गांधी के कांग्रेस के तानाशाही शासन को उखाड़ फेंकने में जेपी को अवश्य सफलता मिली परंतु यह जनता पार्टी भी 2 वर्षों के बाद छिन्न–भिन्न हो गई जिसका उद्देश्य राजनितिक सत्ता हासिल करना मात्र था अतः राजनीतिक सत्ता जरूर मिली पर समाजवाद इसमें काफी दूर रह गया।

स्वतंत्रता समानता एवं बंधुता मानव जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों में शामिल है भूपेंद्र नारायण मंडल का समाज दर्शन भी इन तीन मूल्यों में निहित कहा जा सकता है स्वतंत्रता समानता एवं बंधुता लेकिन किसी को ऐसा नहीं समझना चाहिए कि उन्होंने अपने दर्शन को फ्रांस की क्रांति से ग्रहण किया है उन्होंने ऐसा नहीं किया है उनके दर्शन की जड़े धर्म में है ना की राजनीति विज्ञान में उन्होंने अपने महान गुरु गौतम बुध की शिक्षाओं से इनका अनुकरण किया है भूपेंद्र नारायण मंडल अपने आदर्श समाज में समान अवसर तथा प्रार्थीमिकता युक्त समानता पर बल देते थे ताकि कोई मानव जिसके पास साधन नहीं है, मानव दौड़ में पीछे ना रह जाय भूपेंद्र नारायण मंडल मानते थे कि जहां तक व्यक्तिगत प्रयत्न का संबंध है लोगों को एक दूसरे से भिन्न अथवा आसमान माना जा सकता है। भूपेंद्र नारायण मंडल के शब्दों में यह देश विभिन्न जातियों से मिलकर बना है इन सभी जातियों का समाज में स्थान और विकास एक समान नहीं है। अगर इन सब को एक स्तर पर लाना है तो इसका एकमात्र साधन असमानता के सिद्धांत को अपना और स्तर से नीचे वालों के प्रति अनुकूल वार्ता करना है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ ग्रंथ सूची

भूपेंद्र नारायण मंडल समिति ग्रंथ संपादक मंडल श्यामल किशोर यादव, पृष्ठ–114
बूंद– बूंद सच एक सागर का संपादक भूपेंद्र मधेपुर, पृष्ठ–133
सदन में भूपेंद्र नारायण मंडल संपादक श्यामल किशोर यादव सच्चिदानंद यादव आलोक कुमार, पृष्ठ–25
स्वाधीनता संग्राम और समाजवादी विचारधारा संपादक डॉक्टर चंद्रलोक भारती, पृष्ठ–25
सामाजिक न्याय अंबेडकर विचार और आधुनिक संदर्भ डॉ सुधांशु शेखर, पृष्ठ–36,37
समाजवादि चिंतक के अमर साधक डॉ0 भूपेन्द्र नारायण मंडल संपाक शरदेन्दु कुमार, पृष्ठ–21

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies